



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बनास बेसिन (म0प्र0) की प्राकृतिक वरस्पति का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ० श्याम दत्त दूबे*

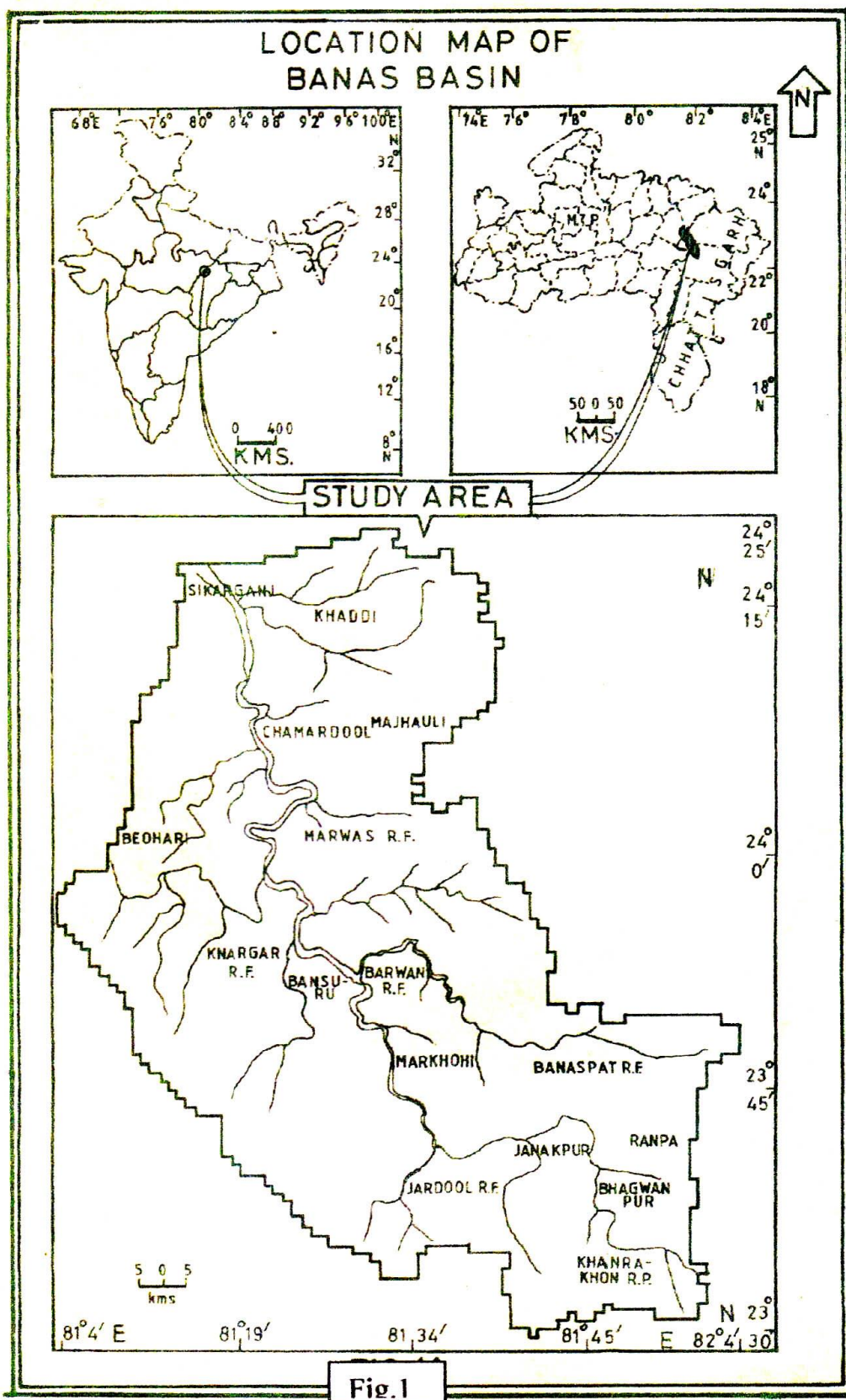
*सहायक आचार्य, स्नात्कोत्तर भूगोल विभाग, मड़ियाहूँ पी.जी. कालेज मड़ियाहूँ जौनपुर।

भूमिका—

किसी भी भूभाग की वनस्पति वहाँ की जलवायु के विभिन्न तत्वों विशेषकर तापक्रम एवं वर्षा, मिट्टी एवं भूपृष्ठ के भूगर्भिक इतिहास का प्रतिफल होती है। जलवायु की दशाएँ वनस्पतियों के वितरण और प्रकार को पूर्णतः प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र में तीव्र चट्टानी सतह, तीव्र ढाल, कगारी सतह आदि के कारण कृषि कार्य कठिन है जिससे पर्याप्त क्षेत्र बचे रह गये हैं। यहाँ के वनों में तेंदू, बॉस, खैर, टीक—अर्जुन, सागौन आदि के वृक्ष एवं आम, महुआ, नीम तथा पहाड़ी भागों में अन्य छोटी—छोटी काँटेदार झाड़ियाँ पायी जाती हैं।

स्थिति एवं विस्तार—

बनास सोन की दक्षिणवर्ती प्रमुख नदी हैं जिसका उद्गम स्थल देवगढ़ उच्च भूमि की चुटकी पहाड़ी के बैरासी गाँव के भवैरखोह में स्थित हैं तथा जिसके अपवाह क्षेत्र का विस्तार मध्य प्रदेश के सीधी और सहडोल तथा छत्तीसगढ़ के कोरिया जनपद पर है। यह नदी कोरिया जनपद पर विस्तृत देवगढ़ उच्च भूमि से निकलकर उत्तर पश्चिम दिशा में प्रवाहित होते हुये शिकारगंज नामक स्थान पर सोन नदी से मिलती है। बनास बेसिन मुख्यतः गोडवाना शैल तंत्र पर विस्तृत है। यह बेसिन 23°30'10" उत्तरी अक्षांश से 24°21'20" उत्तरी अक्षांश एवं 81°4'15" पूर्वी देशान्तर से 82°4'15" पूर्वी देशान्तर के मध्य 3817 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर विस्तृत है। बनास बेसिन अर्धशुष्क मानसूनी जलवायु प्रदेश में स्थित हैं जहाँ मध्य जून से मध्य सितम्बर के वर्षा काल में वर्ष की 90 प्रतिशत से अधिक वर्षा प्राप्त होती हैं तथा शीत एवं ग्रीष्म ऋतुएं शुष्क रहती हैं (चित्र संख्या 1.1)।



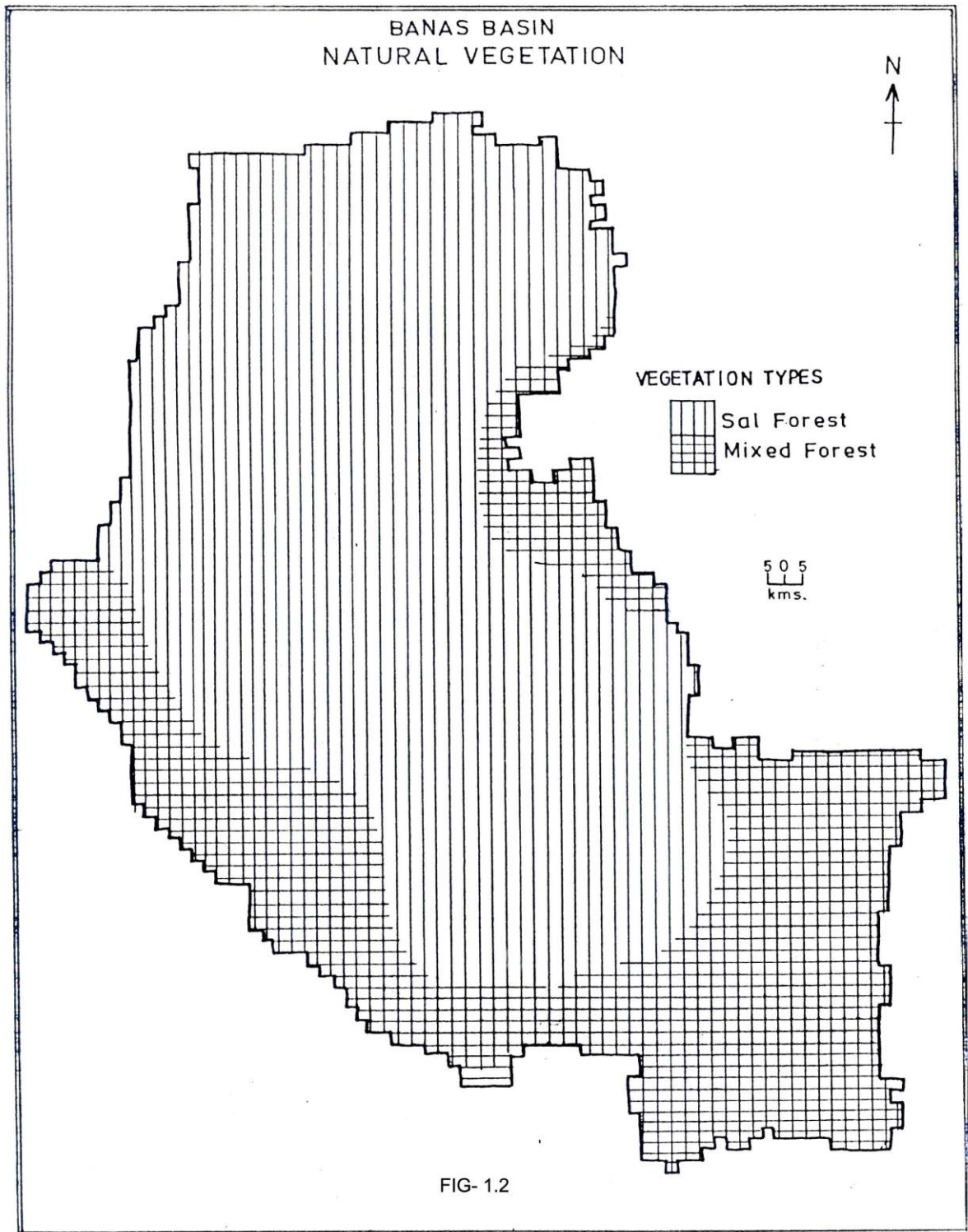
अध्ययन क्षेत्र में पायी जाने वाली प्राकृतिक वनस्पतियों को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है (चित्र संख्या 1.2)।

1. साल वन
2. मिश्रित वन

सालवन

जिन वन क्षेत्र में आयतन के अनुसार 20 प्रतिशत या इससे अधिक साल उपलब्ध है उन्हें साल वन के रूप में वर्गीकृत किया गया है। क्षेत्र के साल वनों का प्रतिशत 20 प्रतिशत से प्रारंभ होकर 80 प्रतिशत तक एवं कहीं कहीं सीमित टुकड़ों में 90 प्रतिशत तक है। साल का वितरण मृदा के भौतिक गुण, जल निकास, नमी एवं शैल समूहों के संगठन पर निर्भर करता है। साल वन मुख्यतः बालुकाश्म से बनी बलुई-दोमट मिट्टी में पाये जाते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में कुछ सीमित स्थानों पर ग्रेनाइट, नीश एवं ट्रेप क्षेत्र में क्रिस्टलीय संरचनायें भी अनुकूल होती हैं। शिष्ट तथा चूनेदार (कैल्केरियस) मृदा पर उगने वाला साल विकृत एवं अविकसित किस्म का है। इस तरह के क्षेत्रों में वृक्षों की अस्वास्थ्यकर स्थिति के कारण साल के वृक्ष में हार्ट रात के रोग तथा लोरेन्थस परजीवी का भी कहीं-कहीं प्रकोप है।

गोंडवाना समूह के दमूदा तथा महादेवा संरचनाओं में जहाँ मृदा गहरी है तथा जल निकास अच्छा है साल के अच्छे व सघन जंगल वर्तमान हैं। मैदानी क्षेत्रों एवं निचले ढलानों में इनकी गुणवत्ता अच्छी है तथा ऊँचे पहाड़ों की ओर जैसे-जैसे बढ़ते हैं इनकी गुणवत्ता में कमी आती जाती है। जिन भूभागों में सूखे का प्रकोप अधिक है वहाँ पर साल वृक्षों का प्रतिशत कम हो गया है और उसकी जगह घावा, तेन्दू सलई और साजा ने ले ली है। साल की मुख्य सहयोगी प्रजातियाँ घवा, तेन्दू, साजा, आँवला, अचार, कारी और जमती है। ढलानों के ऊपरी भागों की कुछ सहयोगी प्रजातियों की जगह सलई मिलने लगता है। यह स्थिति मृदा के उथली हो जाने और नमी में कमी के कारण निर्मित होती है। निचली घाटियों तथा मृदा में पर्याप्त नमी वाले क्षेत्रों में कहीं कहीं पतली पट्टियों में द्वितीय श्रेणी के भी साल वन देखे गये हैं यद्यपि उनका अधिकतम क्षेत्रफल 3 हेक्टेयर में ही है। कुछ भागों में साल वन विरल वनों में भी परिवर्तित हुए हैं। ऐसे क्षेत्रों में निम्न वितान समाप्त प्राय है। पुनरुत्पादन की स्थिति साल वनों में अत्यंत निराशाजनक है। अत्यधिक चराई तथा अग्नि के कुप्रभाव के कारण युवा पौधे बहुत स्थलों पर ही देखने को मिलते हैं। शीर्ष वितान की प्रमुख सहयोगी प्रजातियाँ साजा, तेन्दू, सलई, गुँजा एवं धावा है। इसके अलावा अन्य प्रजातियाँ, कहुआ, बहेड़ा, जमरासी, कुसुम, बीजा एवं धोवन है।



मध्य वितान की प्रमुख सहयोगी प्रजातियाँ सेहारु, धवई, विरहुल, खरहरी प्लेमिंजिया हैं। इसके अलावा अन्य प्रजातियाँ छिंद, करौदा, सतवार, मैनहर, गुड़ सकरी आदि है। इस क्षेत्र की प्रमुख घास की प्रजातियाँ लम्पा, भुरभुसी, ब्रोच एवं प्रमुख लताएँ माहुल, दधैन (पलाश बेल), भेड़ों, दूधबेल, अमजन, बरारी (मकोर), गुगंची, केवटी, रामदातौन आदि है।

मिश्रित वन—

जिन क्षेत्रों में 80 प्रतिशत से अधिक आयतन मिश्रित प्रजातियों का है उन्हें मिश्रित वनों के रूप में वर्गीकृत किया गया है जो समस्त भौमिकीय संरचनाओं तथा सभी प्रकार की स्थलाकृतियों में फैले हुए हैं। अधिकांश मिश्रित वन खण्ड-खण्ड में बंटे हुए हैं तथा बीच-बीच में विरल वन नैसर्गिक अथवा कृत्रिम रूप से रिक्त हुए वन तथा साल वन आते रहते हैं। सलई, धवा, तेन्दू, साजा, गुंजा और आंवला इन वनों की मुख्य प्रजातियाँ हैं। लगभग पूरे क्षेत्र में प्रजाति संरचना लगभग एक सी है। इन वनों में हल्दू वृक्षों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। नदी नाले के किनारे अथवा निचली ढलानों पर मिश्रित वन अधिक मिलते हैं। मिश्रित प्रजाति की बहुलता वाले विरल वनों के साथ ही 0.4 से 0.6 घनत्व वाले सघन मिश्रित वन भी क्षेत्र में मिलते हैं जिसमें मध्यम आयु वर्ग के वृक्षों की बहुलता है। मिश्रित प्रजातियों के पुनरुत्पादन की स्थिति यह है कि अस्थापित पुनरुत्पादन की उपलब्धता स्थापित पुनरुत्पादन की तुलना में बेहतर है आसैर साजा, तेन्दू, धावड़ा, आँवला और हल्दू का पुनरुत्पादन की तुलना में बेहतर है और साजा, तेन्दू, धावड़ा, आँवला और हल्दू का पुनरुत्पादन कहीं-कहीं बहुत सघन है तथापि इनका भी स्थापित पुनरुत्पादन बहुत कम है। इसकी प्रमुख सहयोगी प्रजातियों— धाँवा, तेन्दू, सलई, साजा, गुंजा (भोपन), सेधा (लोडिया), कहुआ (अर्जुन), हल्दू, महुआ, बीजा, साल, काढी, बहेड़ा, बेसा (सफेद सिरस), शीशम, कुल्लू, अचार, आंवला, भेरी, दुग्धी कोरड, भिलभा, जमरासी, बड़कुड़, अमलतास, कारी, पापड़, ककई, हडुआ, केकड़, दहिगन, धवई, भिलभा, सेहारु, करौदा, बेर, ऐंठी आदि हैं। प्रमुख घास की प्रजातियाँ लम्पा, कुली एवं भारवेल हैं और प्रमुख बेलाएँ माहुल, बरारी, मुगची, रामदातोन, भेड़ा आदि हैं। बेसिन के मध्यवर्ती भाग में महुआ के वन विस्तृत भूभाग पर मिलते हैं।

References:-

- 1- Dubey Shyam Dutt- 2004 Drainage Characteristics and Terrain Pattern of Banas Basin : A Geomorphic study – Unpublished Ph.D Thesis. V.B.S. Purvanchal University Jaunpur.
- 2- Holmes, C.D. 1978: Equilibrium in humid- climate physiographic processes American Journal of science, 262,pp.436-445:
- 3- Hanwell, J.D. and Newson M.D.1973: Techniques in physical Geography Macmillan,pp.109,-156
- 4- Jerf, 1949:- A study of soil formation in drainage Basin area.
- 5- Pandey P.and Rai.R.K., 1981 Influences of Land forms in Location and Distribution of Rural Settlement – Bational Geographer Vol.16.No.2 PP, 99-105.
- 6- Rai Ekta 2002, Drainage Characteristics and Terrain Pattern of teiran Basin. A Geomorphic study, unpubl.shed Ph.D. Thesis, V.B.S.P.U. Jaunpur
- 7- Singh Savindra 1978:A Geomorphological study of small Drainage Basin Ranchi plateau.D.phil Thesis Allahabad University Allahabad
- 8- Sukla JP 1995 Drainge Characterstice on Terrain Pattern analysis of Kanhar Basin Unpublided Ph.D. Thesis V.B.S.P.U. Jaunpur
- 9- Upadhyay D.P. 1980 A Morphometric study of small Drainage Basin of S.E. Choota Nagpur region India. Unpublished D.Phil Thesis. Deptt. Gego Allahabad University Allahabad.